<u>निष्कलंक सम्पूर्ण क्रान्ति का बिगुल बज गया है</u>

1. **ऊर्जा का अकालः** – कृष्णावतार काल में किस प्रकार हलधर और गोपाल के द्वारा भारत को महान बनाने के नैष्ठिक प्रयास हुए थे इनका उल्लेख पहिले किया जा चुका है। आज के परिपेक्ष्य में हलधर और गोपाल या तो भुला दिए गए हैं अथवा वे इतने विकृत हो गये हैं कि उन्हें पहिचानना मुश्किल हो रहा है। हलधर बगैर बैल की ऊर्जा के पूर्णतः निष्प्रभावी होता है और आज बैल के महत्व को दिन प्रतिदिन गिराए जाने के प्रयास चल रहे हैं, यधपि कृषि और उधोग में लगने वाली कुल ऊर्जा का 50% से अधिक ऊर्जा बैल से ही आज प्राप्त हो रही है, उसे मांस के रूप में ही बेचने पर जोर दिया जा रहा है। बैल की ऊर्जा कैसे बढाई जाय, उनकी प्रजातियों का विकास कैसे हो इस पर कोई शोध देश में नही हो रहा है। बैल की ऊर्जा के बजाय डीज़ल चलित ट्रेक्टर को आधुनिक कृषि का हथियार बनाया जा रहा है। यह सर्वविदित है कि पेट्रोलियम पदार्थ देश को आयात करने पड़ते हैं। यह आयात मध्यपूर्व के देशों से होता है जिन पर प्रत्यक्ष रूप से अमेरिका का वर्चस्व है। सन् 1960–61 में भारत को लगभग 7000 करोड़ रूपये का पेट्रोलियम पदार्थ आयात करना पड़ा था, सन् 1996–97 में यह आयात लगभग 35000 करोड़ रूपये का हुआ और यह दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जाने वाला है। अमेरिका की एक घुड़की से पेट्रोलियम पदार्थों के दाम कई गुना बढ़ सकते हैं। इतनी धनराशी गरीब भारत कहां से लायेगा? पहिले से ही कुल विदेशी कर्ज पर भारत को सालाना 90,000 करोड़ रूपये ब्याज के रूप में देने पड़ता है। इसके बावजूद डीज़ल चलित ट्रेक्टर देश में अपनी क्षमता के 25% से अधिक नहीं चल पा रहे हैं। इतना डीज़ल देश में उपलब्ध ही नहीं है कि वे अपनी पूरी क्षमता से चलें। अर्थात् बैल की उपेक्षा केवल हलधर को ही मंहगी नहीं पड़ रही है, देश की आज़ादी भी खतरे में है। गोपाल का तो स्वरूप ही भुला दिया गया है। गोपाल हो तो गोवंश पनपे,, गोवंश पनपेगा तो बैल की ऊर्जा उपलब्ध होगी, गोबर गोमूत्र से गांव की भूमि उर्वरा होगी, गाय का दूध सबको उपलब्ध होगा, गौशाला केन्द्रित ग्रामोद्योग सबको रोज़गार देंगे और गौचर केन्द्रित कृषि व्यवस्था सबको भरपेट पौष्टिक भोजन देगी।

2. **आधुनिक कृषि की विडम्बनाः–** आधुनिक कृषि का केवल एक ही अभिशाप देखने को नहीं मिल रहा है। रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाओं से देश की उर्वरा भूमी निस्तेज होती चली गई है। कुछ बड़े–बड़े काश्तकार देहात के अर्थतंत्र पर काबिज हो गए हैं। गौचर की भूमी आसपास के किसानों की जोत के भाग बन गये हैं। भूमिहीन कृषक मज़दूरों के पशुधन अर्थात उनकी एकमात्र सम्पति के लिए कहीं ठौर नहीं बचा है। गौचर क्षेत्र से ही देहात के गरीब पीने का पानी, जलौनी लकड़ी, उपले आदि हासिल करते थे और अपने पशुओं को चराकर अपनी आजीविका चलाया करते थे। गांव के तालाब और कुंओं का पानी सूख गया है क्योंकि टयूबवेल के द्वारा भूजल को खींचकर आधुनिक कृषि चलाने का क्रम चल पड़ा है और भूजल का स्तर गिरता जा रहा है। पीने के पानी की त्राहि–त्राहि मच रही है। दूर–दूर से नल द्वारा पानी पहुंचाने की योजनाएं बन रही हैं, जिनमें पानी तो नहीं पहुंचता, उसकी आवाज़ की सांय–सांय प्यासों को भ्रमित करती रहती है। ये योजनाएं ठेकेदारों के लाभ के लिए बनती हैं। आधुनिक कृषि दिन प्रतिदिन मंहगी होती जा रही है और जो भारत देश विश्व भर मे अनाज की पैदावार के लिए, उसमें आत्म निर्भर होने के लिए यशस्वी था, वह अब फिर अकाल की चपेट में आ सकता है। यदि समय रहते टिकाऊ कृषि व्यवस्था का सरंजाम नहीं जुटाया जाता है तो अनाज के विषय में देश की आत्म निर्भरता खतरे में पड़ सकती है जो देश की आजादी के लिए दूसरा खतरा है। इसी परिपेक्ष्य में गौचर केन्द्रित टिकाऊ कृषि व्यवस्था की वकालत की जा रही है। लेकिन जो नुकसान देहात के विकेन्द्रित अर्थतंत्र के इस प्रकार से बिखरने का देश को उठाना था वह तो चारों ओर देखने में आ ही रहा है। देहात वीरान और महानगर बड़े और उससे बड़े होते चले जा रहे हैं। विकेन्द्रित अर्थतंत्र के स्थान पर पूरी व्यवस्था का केन्द्रीयकरण होता चला गया है जिससे गरीब पर जीवित भर रहने का भार बढ़ता गया है। देहात के गरीबों को महानगरों की ओर भागने के सिवाय कोई और द्वार नज़र नहीं आ रहा है।
3. **महानगरीय उपनगरों की गन्दी बस्तियांः–** यह कहा जा चुका है कि देहात के बिखरते हुए अर्थतंत्र की मार वहां के सबसे गरीब, बेसहारा, भूमिहीन कृषक मज़दूरों पर पड़ी है जिसके कारण उन्हें आजीविका की तलाश में महानगरों की चमचमाती रोशनी ने आकर्षित किया और वे यहां आकर एक के बाद एक गन्दी बस्ती और उपनगरों को बसाते चले गये। कुछ लोग नई–नई बनने वाली अट्टालिकाओं के निर्माण में मज़दूर

बन गए तो कुछ नए–नए पनपते अवैध धन्धों में खपते चले गए। पुलिस और भू–माफिया के शिकंजे इन अभागों पर कसते चले गए और झुग्गी झोपड़ियों को कानूनी मान्यता दिलाने के राजनैतिक सब्ज़बाग भी दिखाये जाते रहे। धरती पर स्वर्ग उतारने के सपने तो युग निर्माण मिशन ने अपने परिज़नों को प्रेरित करने के लिए रचे लेकिन धरती पर नरक कैसा दिखता है यह इन गन्दी बस्तियों में रहने वाले अभागों ने आरम्भ से ही जाना। यहां रहने वाले दुःख, दर्द, बीमारी, बदहाली में जीवन बसर करने वाले सीधे–साधे देहाती आज न उस देहात के हैं जहां उन्होंने ज़न्म लिया था और न उस शहर के जहां की गन्दी बस्तियों में उन्होंने शरण ली है। कार्ल मार्क्स की परिभाषा के सच्चे अर्थों में सर्वहारा आज वास्तव में भारत के महानगरों के उपनगरों की गन्दी बस्तियों में नारकीय जीवन बिता रहे देहात के सबसे गरीब वर्ग के लोग हैं। उन्हीं के बीच पैदा हो रहे हैं भेदभाव और असमानता जनित विद्वेष की आग में जल रहे नव क्रान्तिकारी जो कुछ कहना चाहते हैं ताकि उनके परिजनों की दुर्दशा का अन्त हो। दूसरी ओर **पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य** ने सद्भवना, प्रेम और श्रद्धा पर आधारित एक सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्रान्ति का अभियान छेड़ा है जो अभी तक महानगरों के उपनगरों में निवास कर रहे अभागे ग्रामवासियों तक नहीं पहुंचा है। सब सुविधओं से सम्पन्न महानगरों के इतने करीब रह रहे उपनगरवासी इन सुविधाओं से इतनी दूर हैं कि उसकी भनक तक अभी महानगरवासी अभिजात्य वर्ग के लोगों को नहीं लगी है। यह विरोधाभास कब तक चलने वाला है? या तो मिशन की संस्कार पद्धति का इन उपनगरों में शीघ्रातिशीघ्र प्रवेश हो, अन्यथा महानगरीय सभ्यता का विनाश होने में अब देर नहीं है। यदि प्रेम और निर्माण की धारा इन उपनगरों में नहीं बहाई गई तो लहू और लोहे की क्रान्ति अब किसी भी समय हो सकती है।

4. **गन्दी बस्तियों में आशा का संचारः–** प्रेम और निर्माण की धारा को इन उपनगरों में किस प्रकार से पहुंचाया जाय? एक तो सीधा दायित्व आता है महानगरों में निवास कर रहे गायत्री परिवार के परिजनों पर जिनके घरों में इन झुग्गी–झोपड़ियों के लोग सेवा का काम करते हैं। क्या वे अपने ही घर के सेवक की झुग्गी में जाकर मिशन संस्कार पद्धति का सूत्रपात नहीं कर सकते हैं? यदि ऐसा हो सके तो फिर बात धीरे–धीरे बढ़ सकती है। व्यापक पैमाने पर यह होने लगे तो गायत्री परिवार के हर परिजन के निवास स्थान के करीब की गन्दी बस्तियों में सत्संस्कार की सुगन्धित हवा बहना

आरम्भ हो जायेगी। दूसरा प्रयास महानगरों के समीप के देहाती क्षेत्र में निवास कर रहे परिजनों द्वारा भी किया जा सकता है। वे अपने रोजमर्रा के कामों के लिऐ समीप के महानगर तो आते–जाते ही रहते हैं। साप्ताहिक छुट्टी के दिन वे समीपस्थ उपनगर की गन्दी बस्ती में जन्मदिन, पुंसवन, नामकरण, अन्नप्रासन, विद्यारम्भ आदि संस्कार तो करा ही सकते हैं। इस प्रकार के व्यापक प्रयासों से कुछ समय बाद इन उपनगरों में से ही युवा परिजन उभरने लगेंगे जो प्रेम और निर्माण की धारा को प्रगाढ़ करते चलने के लिए सक्रिया हो जायेंगे और उन युवाओं के हृदय परिवर्तन में भी सफल हो जायेंगे जो लहू और लोहे की क्रान्ति को समाज बदलने का एकमात्र साधन समझते हैं।

5. **स्वालम्बन का प्रशिक्षणः–** संस्कारों के उपलक्ष्य में आयोजित गायत्री यज्ञों की व्यवस्थित शृंखला के चलने से उपनगरों के कई परिवार समूहों को धीरे–धीरे संस्कारित तो किया ही जा सकेगा, उनके प्रयाज की प्रक्रिया से इन गन्दी बस्तियों में सफाई का माहौल बनना आरम्भ हो जायेगा और यज्ञीय धूम्र से गन्दगी का शमन भी होना आरम्भ हो जाएगा। इस प्रकार सतत् रूप से प्रयासरत रहने से इन उपनगरों में परिजनों का एक प्रभावी वर्ग उभरने लगेगा जो हिंसा और घृणा के स्थान पर संस्कार पद्धति ये लोकशिक्षण के दायित्व को सम्भाल कर पतन निवारण की दिशा में क्रियाशील हो चलेगा, इन्हीं परिजनों में से प्रत्येक उपनगर से सौ कर्मठ युवा परिजन ढूंढ निकालने हैं जो समीप के किसी न किसी शक्तिपीठ पर स्वालम्बन का प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने देहात की ओर प्रस्थान करने का संकल्प लेंगे। इसके पूर्व उस देहात के क्षेत्र में भी उनके स्वागत की तैयारी की जानी होगी । उनके देहात लौटने पर वे किस प्रकार का व्यवसाय करेंगे–इसकी योजना भी पहिले से ही बनानी होगी। उसका विशिष्ट प्रशिक्षण, यदि आवश्यक हुआ तो उन्हें समय से दिया जाना होगा। स्वयं सेवी बचत समूह गठन की प्रक्रिया में भी उन्हें सिद्धहस्त बनाना होगा। यह सब आयोजन शान्तिकुंज्ज से प्रशिक्षित उस चयनित शक्तिपीठ के तीन पूर्ण कालिक समयदानियों द्वारा सम्पन्न होना होगा।
6. **आज का स्वतंत्रता संग्राम–गांव स्वावलम्बी बनेंः**–इन सौ व्यक्तियों को दस–दस के दस समूहों में संगठित करने की कार्यवाही भी देहात वापस लौटने के संकल्प से पहिले सम्पन्न करनी होगी ताकि प्रत्येक समूह अपने समकक्ष दस व्यक्तियों को क्षमतावान्

बनाकर उसी देहाती क्षेत्र से समायोजित कर सकेंगे और इस प्रकार बीस–बीस सदस्यों वाले बचत समूह गठित हो चलेंगे। बीस व्यक्तियों अथवा परिवारों का एक समूह जिसमें दस उपनगरवासी होंगे और दस उस देहात के, मिलकर उपयुक्त एवं सुविधाजनक ग्रामोद्योग को चलाना आरम्भ कर अपने पैरों पर खड़ा होने का पुरुषार्थ करने लग जायेंगे। इस प्रकार के संगठन और आयोजन ही प्रकारान्तर में गांवो को स्वावलम्बी बना सकेंगे जिसके लिए शान्तिकुंज्ज में प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। "अब गांव वापस चलें" की योजना का स्पष्ट स्वरूप यही है और इसी के माध्यम से आज का स्वतंत्रता संग्राम लड़ा जाना है जो हर गांव के हर परिवार द्वारा लड़ा जाएगा। शान्तिकुंज्ज में जो 6 दिवसीय प्रशिक्षण का कार्यक्रम हाथ में ले लिया गया है उसके अर्न्तगत प्रयास यह है कि देश की कम से कम 500 शक्तिपीठों को स्वावलम्बन के प्रशिक्षण के लिए तैयार किया जाय। कालान्तर में यह संख्या बढाई जानी होगी ताकि मिशन के शक्तिपीठ स्वावलम्बन के प्रशिक्षण केन्द्र बनकर पूरे देश के ग्रामीण क्षेत्र को लाभ दे सकें। इस प्रकार विकसित शक्तिपीठ स्वावलम्बन का प्रशिक्षण देने के साथ–साथ समीप के क्षेत्र में रचनात्मक गतिविधियों के फील्ड चैप्टर के रूप में उभरने लगेगा। इसी उद्देश्य से शक्तिपीठों को प्रेरणा दी गई है कि वे कम से कम तीन पूर्णकालिक सुयोग्य एवं कर्मठ परिजनों को शान्तिकुंज्ज में 6 दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए केन्द्र से अनुमति मांगें। ये तीन प्रशिक्षित परिजन शक्तिपीठ वापस लौटने पर विशेषज्ञों एवं मास्टर क्राफ्ट्समैन का एक प्रशिक्षक मण्डल गठित करेंगे जो उस क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वावलम्बन का प्रशिक्षण देने में सक्षम हो सकेगा। इस प्रकार के सामूहिक प्रयासों से ही महानगरों की गन्दी बस्तियों से युवाओं को देहात लौटकर स्वावलम्बी बनने को राजी किया जा सकेगा और तभी ये गन्दी बस्तियां बिखरने लगेंगी और तभी महानगरों में होने वाला जनसंख्या विस्फोट टल सकेगा।

7. **जाति वंश सब एक समानः**– हर महानगर और उसके समीप के देहाती क्षेत्र के परिजन अब इस मन्तव्य पर क्रियाशील होने के बारे में अपनी–अपनी योजना, व्यक्तिगत और सामुहिक रूप से बनाना आरम्भ करने पर गम्भीरता से विचार करें और उसके विषय में केन्द्र को भी सूचित करें। महानगरों एवं उनके उपनगरों में निवास करने वाले सभी लोग कितने ही कष्ट में क्यों न हों और कितने ही दुर्गुणों को बढ़ाने वाले क्यों न हों लेकिन भारतीय समाज के एक बड़े दुर्गुण, जातिवाद के दुराग्रहों से वे पुर्ण रूप से मुक्त

हो चुके हैं। उनके इस सदगुण का लाभ उठाने का समय भी अब आ गया है। जाति–पांति के भेदभाव वाले भारतीय समाज से इस विष को अब जड़ मूल से निकालना है और उसके के लिए उपयुक्त व्यवस्था भी बना दी गई है। पूज्य गुरूदेव ने नवयुग की क्रान्ति को सफल बनाने के लिए एक आवश्यक शर्त लगाई थी कि अब विश्व में सबको कर्म से ब्राह्मण बनाने का जुगाड़ पहिले करना होगा। शहरी उपनगरों के जो परिजन देहात लौटकर गांवों को स्वावलम्बी बनाने का संकल्प लेंगे वे शहरों के जाति–पांतिगत दुराग्रह मुक्त संस्कारों को भी देहात अपने साथ ले जायेंगे। उनके माध्यम से देहात में व्याप्त इन दुराग्रहों से मोर्चा लेने का भी आयोजन परिजनों को करना होगा। "अब गांव वापस चलें" के अभियान का यह भी एक मकसद हो चलेगा कि अपने देहात को जाति–पांति के दुराग्रहों से मुक्त कराया जाय। ये दुराग्रह ही भारतीय राजनीति का सबसे बड़ा कलंक है। इनको भारतीय राजनीति से बाहर निकालने का भी अवसर प्रस्तुत हो गया है। और तभी हो सकेगा एक स्वस्थ जनतंत्र का प्रादुर्भाव जो इस देश को पुनः जगद्गुरु के पद पर प्रतिष्ठित करने में सहायक होगा।

8. **पिछले पचास वर्षों की राज्याश्रित विकास प्रक्रियाः–**आजादी के बाद भारत की शासन प्रणाली एक कल्याणकारी राज्य की तरह विकसित हुई जिसमें यह मान्यता निहित थी कि समाज के मूर्धन्य प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति शासन प्रक्रिया में सम्मिलित होंगे और समाज व्यवस्था का उत्कृष्ट नमूना पेश करेंगे। स्वतंत्रता संग्राम की आर्दशवादिता भी शासन वर्ग के सदस्यों में समायी हुई थी जिसके कारण आज़ादी के बाद के दो दशकों तक भारत की शासन व्यवस्था सुदृढ थी और देश ने आशातीत प्रगति की थी। धीरे–धीरे स्वतंत्रता संग्राम में पके हुए सिपाही राजनैतिक दलों से गायब होने लगे और राजनीति के व्यवहार में विकृतियां प्रवेश करने लगी। सामान्य निर्वाचन प्रणाली में राजनैतिक दलों द्वारा अपनायी गई उद्दण्ड और दूषित प्रवृतियों तथा चुनावी खर्चों में बेतहाशा वृद्धि से शासन प्रक्रिया भी दूषित होने लगी। प्रशासन व्यवस्था के माध्यम से लोगों की समस्याओं का समाधान धीरे–धीरे कम कारगर तरीके से किया जाने लगा। राजकीय धन का विभिन्न प्रकार के घोटालों में अपव्यय सन् 1980 के दशक से बड़े पैमाने पर आरम्भ हो चुका था। धीरे–धीरे ईमानदार व्यक्तियों का गुजारा न राजनीति में सम्भव पाया जाने लगा और न ही प्रशासन के विभिन्न स्तरों पर। भ्रष्टाचार को

सामाजिक मान्यता मिलती चली गई और कम से कम समय में एनकेन प्रकारेण अधिक से अधिक धन कमाना योग्यता का मापदण्ड समझा जाने लगा। वस्तुस्थिति यह है कि अब सामान्य समस्याग्रस्त व्यक्तियों का शासन व्यवस्था पर से विश्वास उठ सा गया है। स्पष्ट है कि राज्याश्रित विकास प्रक्रिया अब अपनी अंतिम साँसें गिन रही है। अब समाज को अपनी समस्याओं के समाधान तथा सामुदायिक विकास का एक नया आयाम तलाशना है जो अधिक विश्वसनीय और कारगर होगी। इसी परिप्रेक्ष्य में गौसेवा केन्द्रित जीवन पद्धति जो इस देश की सांस्कृतिक धरोहर है को पुनर्जीवित करने का अभियान छेड़ा गया है। गौ सेवा केन्द्रित जीवन पद्धति को सर्व सामान्य के लिए सुविधाजनक बनाने के लिए गौशालाओं का एक देशव्यापी जाल खड़ा करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। तब गौ संवर्धन आम लोगों के लिए सुविधजनक तो हो ही जाएगा, गौहत्या से भी गोवंश को बचाया जा सकेगा। गौहत्या को रोकने के विषय में घड़ियाली आँसू पिछले 50 वर्षों से बहाए जा रहे हैं, लेकिन गौ संवर्धन की व्यवस्था न होने से गौहत्या बेरोक–टोक चल रही है। गौसंवर्धन को ही गौसेवा की श्रद्धा पर आधारित विकास प्रक्रिया की संज्ञा दी गई है जो निश्चय ही अधिक कारगर और विश्वसनीय सिद्ध होगी। यह विकास प्रक्रिया विकेन्द्रित तो होगी ही, उसके माध्यम से व्यवस्था के और अधिक केन्द्रीयकरण को जो आज की अर्थव्यवस्था का अभिषाप है, भी धीमा किया जा सकेगा। व्यवस्था के केन्द्रीयकरण का कहर सबसे अधिक समाज के गरीबों को झेलना पड़ता है, और उसका जन सामान्य द्वारा मुकाबला गौसेवा केन्द्रित जीवन पद्धति से ओत–प्रोत विकास प्रक्रिया द्वारा किया जा सकता है। संवेदना शून्य होता जा रहा हमारा समाज भी पुनः संवेदनशील हो चलेगा।

9. **बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का देश मे प्रवेशः**–सिमटती हुई राज्याश्रित विकास प्रक्रिया के खाली स्थान को भरने के लिए एक और होड़ मची हुई है जो सात समुन्दर पार से प्रेरित है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के माध्यम से देश के अर्थतन्त्र का भूमण्डलीकरण अथवा अर्थव्यवस्था के उदारीकरण जैसे सम्बोधन परोक्ष में भारत की अर्थव्यवस्था पर उनके द्वारा कब्जा कर लिए जाने का उनके लिए सुनहरा अवसर प्रस्तुत करते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में यह याद करना देश के हित में होगा कि पचास वर्ष पूर्व प्राप्त राजनैतिक आज़ादी आर्थिक आज़ादी को खो देने से स्वतः हाथ से जाती रहेगी। आज जब वह भागवत मुहुर्त आ पहुँचा है जब देश का आत्म गौरव जाग रहा है तथा निष्कलंक

प्रज्ञावतार का अवतरण हो रहा है, गौसेवा केन्द्रित जीवन पद्धति के प्रचार–प्रसार के अभियान, जो गौशालाओं के देशव्यापी जाल के स्थापित होने से ही सफल हो सकता है, को प्रभावी बनाने के लिए थोड़े से ही प्रयास से, महाफल देखने को मिल सकता है। यही आज देश की अर्थव्यवस्था को स्वतन्त्र बनाए रखने के लिए लड़े जाने वाले स्वतंत्रता संग्राम का स्वरूप है, जो हर गांव हर खेत और हर घर से लड़ा जाना है। यह स्वतंत्रता संग्राम लहू और लोहे से नहीं, वरन प्रेम और निर्माण की धारा बहाकर लड़ा जाना है। इसी से गौचर केन्द्रित कृषि व्यवस्था का प्रार्दुभाव होगा जो देश को अन्न और जल से भरपूर कर देगा और इसी से विकसित होगी गौशाला केन्द्रित ग्रामोद्योग व्यवस्था जो हर हाथ को रोजगार देगी। “अब गांव वापस चलें” बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की केन्द्रीयकृत विकास प्रक्रिया का मुकाबला करने के लिए देशवासियों को दिया गया युग निर्माण मिशन का मंत्र है जो एक बार फिर देश के हर गांव को स्वायत्त्ता प्रदान करेगा। यह होगी वास्तव में निष्कलंक सम्पूर्ण क्रान्ति जो भारत से आरम्भ होकर फिर पूरे विश्व को अपना शीतल और सुखद स्पर्श प्रदान करेगी। भविष्य में पुनः जगद्गुरु का पद प्राप्त करने वाले भारत देश की आज की पीढ़ी पर यह दायित्व आ पड़ा है कि इस भागवत मुहुर्त पर वे सोते ही न रह जाय और युग निर्माण करने के पुण्य से वंचित न हो जाय। **उत्तिष्ठत, जागृत, प्राप्य वरान्निबोधत्।**

ऋचा प्रकोष्ठ
शान्तिकुज्ज, हरिद्वार